" 'उचक्का' आत्मकथा में चित्रित जनजातीय समस्याएँ "

शोधछात्रा - प्राजक्ता अंकुश रेणुसे
शिवाजी विश्वविद्यालय , कोल्हापुर
E mail - prajurenuse30@gmail.com
Mob no. - 8551829188

सारांश –

डॉ.सूर्यणानायण रणसूबे कृत अनूदित लक्ष्मण गायकवाड की ' उचक्का ' इस आत्मकथा में लोग आर्थिक विवंचना से ग्रस्त हैं यह लोग अपनी रोजी-रोटी के लिए और 'उठाईगीर' यह उन पर ठप्पा लगने के कारण यह लोग मजबूरी में आकार चोरी के मार्ग का अवलंब करते हैं। यह लोग एक जगह से दूसरे जगह स्थलांतरण करते हैं। इसतरह कही पर नौकरी न मिलने के कारण यह लोग चोरी कर रहे हैं और विमुक्त घुमंतू का बढ़ता प्रमाण हमारे सामने आ रहा।

बीज शब्द - उठाईगीर, घुमंतू, जनजातियाँ, विमुक्त

विश्व में अनेकानेक लोग किसी न किसी कारणवश घुमते रहते हैं। वैसे ही भारत में भी लोग घुमते रहते हैं कई लोग घुमने के लिए तो कई लोग अपनी रोजी-रोटी की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह अपना स्थलांतरण करते हैं। इसतरह विमुक्त और घुमंतू समुदाय ऐसे ही लोगों को कहा जाता है जो लोग अपनी रोजी-रोटी के लिए एक जगह से दूसरी जगह या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान अपना स्थलांतरण करते है उन्हें विमुक्त समुदाय कहा जाता है। पिछले कई सालों से यहाँ तक कि अंग्रेजों के काल से यह समुदाय अस्तित्व में हमें दिखाई देता हैं। महाराष्ट्र में विमुक्त एवं घुमंतु समुदाय के अंतर्गत अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती, भटक्या जमाती तथा नागरिकता के सामाजिक और शिक्षिक रूप से पिछड़ा वर्ग आदि का समावेश होता हैं।

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे कृत अनूदित लक्ष्मण गायकवाड़ की 'उचक्का' इस आत्मकथा के अंतर्गत भी इस विमुक्त घुमंतू समुदाय का चित्रण दिखाई देता है। लोग अपनी रोजी-रोटी चलाने के लिए पेट भरने के लिए चोरियाँ करते हैं, इसके लिए वो एक जगह से दूसरी जगह स्थलांतर करते है इसी कारण यह लोग घुमंतू समुदाय के अंतर्गत आते हैं। उन्होंने अपना एक समुदाय बनाया है उसे 'उचक्का' आत्मकथा में 'उठाईगीर' नाम से पहचाना जाता हैं। समाज में यही उठाईगीर नाम पड़ने के कारण उनके सामने कई समस्याएँ आती हैं। उन्हें कोई भी नौकरी पर नहीं रखता इसके कारण बेरोजगारी का प्रमाण बढ़ गया है और उनके घर में भी आर्थिक विवंचना आ जाती है। इसीकारण यह लोग अपना पेट भरने के लिए चोरी के मार्ग का अवलंब करते हुए हमें इस आत्मकथा में दिखाई देता है। घुमंतू समुदाय को 'घुमक्कड' भी कहा जाता है। लोग अपने शौक से भी घुमते हैं लेकिन 'उचक्का' आत्मकथा में यह अपनी विवशता के कारण घुमते हैं। इसलिए उन्हें घुमंतू जनजातियाँ भी कहा गया हैं। वैसे देखा जाए तो आज-कल हमें इन समुदायों पर साहित्य भी प्रचलित मिलता हैं।

'उचक्का' यह लक्ष्मण गायकवाड की आत्मकथा है।उसमें भी ऐसा एक समूदाय है जो अपना पेट भरने के लिए एक जगह से दूसरी जगह चोरियाँ करने के लिए स्थलांतरण करता है। इन समुदायों को अनेक समस्याओं से गुजरना पड़ता हैं उन समस्याओं का विवेचन हम यहाँ पर करते हैं -

'उचक्का' आत्मकथा में 'लक्ष्या' नाम से पहचाननेवाले लक्ष्मण गायकवाड है, वे पहली बार जब पाठशाला गए थे उस वक्त उन्हें कुछ अजीब सा महसूस हुआ था जैसे मानो सियारों के झुंड में मानो अकेली बकरी पहुँच गई। कक्षा के बाकी छात्र उन्हें 'उठाईगीरी' होने के कारण चिढाते थे और कहते कि इसके कारण हम बिमार पढ़ सकते है। "तूने अपने लड़के लक्ष्या को स्कूल में भरती कर दिया है, इसीकारण हमारे बच्चे को उलटियाँ और टट्टी हो रही हैं। इसके पहले आज तक अभी इस बस्ती में हैज की बीमारी नहीं आई थी। आज तक कभी कोई बीमारी नहीं हुई थी। बस! तेरा यह लड़का लक्ष्या जैसे ही स्कूल में जाने लगा, इधर बीमारी शुरू।" 1 इसतरह लोगों की मानसिकता बन गई थी कि लक्ष्या पाठशाला आने के कारण हमारे बच्चे बीमार पड रहे है। यह उठाईगीर होने की एक समस्या उनके सामने आती है मतलब शिक्षा भी उन्हें सही ढंग से ग्रहण करना मुश्किल है। इसी कारण उनपर बहिष्कार भी डाला जाता है। "हमारी जाति के लोग अब और चिढ़ गए। जात-पंचायत बुलाई गई और यह निर्णय लिया गया कि या तो मारतंड गॉव छोड़े अथवा लक्ष्या को स्कूल भेजना बन्द करे।"2 चोरी करने के कारण मतलब उठाईगीर यह ठप्पा उनके समाज

पर लगने के कारण उनके बच्चों को शिक्षा हासिल करना भी मुश्किल हो गया हैं। इस समाज कि यह एक बड़ी समस्या हमारे सामने आती हैं।

'उचक्का' आत्मकथा में एक जाती का उल्लेख दिखाई देता है 'संतामुच्चर' इसे देशभर में पहचाना जाता है 'संता' का मतलब बाजार और 'मुच्चर' का अर्थ चोरी करनेवाला या फिर उठाईगीर। इस समुदाय में चोरी कैसी की जाए इसका प्रशिक्षण दिया जाता हैं। इस दल के अंतर्गत लेखक के परिवार के कई सदस्य हैं। वह लोग रोज चोरी करते है और अपना घर चलाते है लेकिन एखाद दिन अगर वह पुलिस के हाथों लग जाने के बाद वह तय करते है यहाँ से आगे चोरी नहीं करेंगे। "चोरी छोड़कर मेहनत-मजदूरी की इच्छा सबकी है, पर उठाईगीर कहकर कोई काम तो नहीं देता।" 3 वह लोग चोरी नहीं करेंगे इमानदारी से रोटी कमाकर खाएँगे ऐसा तय भी करते है लेकिन पूरा समाज उन्हें 'उठाईगीर' नाम से पहचानने के कारण उन्हें कोई काम पर भी नहीं रखता हैं। इसीलिए बेरोजगारी की समस्या उनके सामने उभरकर आती है।

बेरोजगारी की एक बड़ी समस्या से तो उनके सामने खड़ी ही है लेकिन घर चलाना है तो रोजी-रोटी तो कमानी ही है तो उन्हें कोई भी काम करना ही है अब चाहे वह छोटा हो या बड़ा लेकिन समाज ने उनपर 'उठाईगीर' होने का ठप्पा लगाने के कारण उन्हें कोई भी नौकरी पर नहीं रखता क्योंकि उन लोगों की ऐसी समझ रहती है कि यह लोग दिनभर सबकुछ देखते है और हमारे यहाँ ही चोरी करने के लिए आते हैं इसलिए उन लोगों को कोई भी नौकरी देने के लिए कोई तैयार नहीं रहता है। लेकिन इन लोगों के सामने अब दो वक्त के निवाले का सवाल फिर से सामने उभरकर आता है तो वह लोग पुनः मजबूरी में चोरी के मार्ग का ही अवलंब करते हैं। 'उचक्का' आत्मकथा में एक बार दादी चोरी करती हुई पुलिस के हाथ लग जाती है। उसके कारण घर में चोरी का माल नहीं आता हैं घर की आर्थिक परिस्थिती बहुत ही बिकट हो जाती है और आर्थिक विवंचना महसूस होने लगती है। "मेरी दादी चोरी करती। कभी वह पकड़ी जाती तो पुलिस दो-तीन महिने उसे जेल में डाल देती। फिर घर में फाके पड़ते। घर में जब कुछ न होता तो बाबा (मैं अपने पिताजी को बाबा कहता हूँ मारतंड उनका नाम हैं।, माँ धोंडीबाई, बड़ा भाई माणिकदादा रात को दूर खेतों की ओर निकल जाते, जवार के भुट्टे, मिर्च, बाजरा और फलियाँ चोरी कर ले जाते।" 4 बेरोजगारी की समस्या होने के कारण और काम न मिलने के कारण दादी चोरी करती है और पकड़े जाने के बाद घर में आर्थिक विवंचना महसूस होती हैं। घर में सभी भाई-बहन भूखे है इसलिए माँ, धोंडाबाई और बड़ा भाई माणिकदादा रात को खेतों में जवार के भुट्टे और मिर्च, बाजरा की चोरी करते हैं। इसप्रकार रोजी-रोटी की एक समस्या भी उनके सामने है इसे ही पूरी करने के लिए वे लोग चोरी करते हैं।

खाना, कपडे, और मकान यह तीन लोगों की बुनियादी जरुरतें होती हैं। इन जरुरतों को पूरा करने के लिए उन्हें कही पर तो नौकरी करना जरूरी है लेकिन उनके सामने कई समस्याएँ उभरकर सामने आती हैं जैसे - बेरोजगारी, रोजी-रोटी, अशिक्षा और यह लोग आर्थिक विवंचना से ग्रस्त भी हैं। इसलिए आर्थिक विवंचना को दूर करने के लिए वह चोरियाँ करते हैं। "हर अमावस - पूनम को मैं किसी के जूते या चप्पल लिए हरचंदा के पीछे-पीछे चलता। ओढ़ने के लिए हम दोनों के लिए एक ही चादर थी। मुझे ही क्यों, घर में किसी के लिए भी नए कपड़े कभी आए ही नहीं। आते भी कहाँ से? सभी चोर के ही होते, औरतों के लिए साडियाँ ले जाते तो उनसे सस्ते में खरीद लेते। ये कपड़े फट जाने के बाद इनसे गुदडियाँ बना ली जातीं।"5 इसप्रकार अपनी आर्थिक परिस्थिती कमकुवत होने के कारण और अपनी आर्थिक परिस्थिती में सुधार लाने के लिए अपनी जरुरतों को पूरा करने के लिए मतलब रोजी-रोटी मिलने के लिए वह लोग चोरी करते हैं।

'उचक्का' आत्मकथा में हमें ओर एक घटना का चित्रण दिखाई देता है कि लोगों का एक दल रहता है उसमें से सभी सदस्य चोरी करते हैं और इकट्ठा किए हुए पूरी सामग्री का बँटवारा करके लिया जाता हैं अगर उस दल के साथ किसी ने बेईमानी कि तो उसे बहिष्कृत किया जाता हैं। "जिस दल के साथ जो कोई बेईमानी करता और अगर यह सिद्ध हो जाता, तो उस व्यक्ति को उस दल के लिए छः महीने या दो महीने चोरी करके पूरे का पूरा माल उस दल को देना पड़ता था। उसने बेईमानी की इसलिए उसे उसका हिस्सा नहीं मिलता था। चोरी करने के बावजूद उस वस्तु पर उसका कोई अधिकार नहीं होता था। अगर कोई उस फैसले को नकारता है, तो उसे जाति से बहिष्कृत किया जाता।"6 इसतरह उनके सामने रोजी-रोटी के लिए पेट भरने के लिए काम करने का तय भी किया तो काम भी नहीं मिलता और इन चोरियाँ करने के दल ने अगर बहिष्कृत किया तो चोरी भी करनी है लेकिन उनके हिस्से के लिए वह कुछ भी नहीं देते पूरे परिवार को ही बहिष्कृत किया जाता है। इसतरह अनेकानेक समस्याएँ इन लोगों के सामने खड़ी रहती हैं इसका चित्रण हमें दिखाई देता हैं।

डॉ. सूर्यनारायण रणसूभे कृत अनूदित लक्ष्मण गायकवाड़ की 'उचक्का' इस आत्मकथा के अंतर्गत लोग अपना घर चलाने के लिए रोजी-रोटी खाने के लिए चोरी करने पर मजबूर हो गए हैं। कई बार तो वह लोग अपनी जरुरतों को पूरा करने के लिए अपने बच्चों को भी बेचते हैं। ऐसी भयानक परिस्थिती से वह गुजरते हैं। लेखक इसतरह की परिस्थिती को देखकर उन बच्चों के विकास के लिए वह 'पाथरूट समाज संगठन' की स्थापना करने की कोशिश करते है। "अनेक दिशाओं से प्रयत्न करने के बाद 1979 में कवठा में विमुक्त जनजातियों की शिक्षा संस्था को रजिस्टेशन मिल गया।"7 इसतरह उन उन जनजातियों का धीरे-धीरे विकास हो रहा हैं।

इस आत्मकथा के जरिए हमें यह बात समझ में आती हैं कि यह उठाईगीर समाज आर्थिक विवंचना से पीड़ित होने के कारण इस समाज के लोग चोरी करने के मार्ग का अवलंब करते हैं। इन लोगों पर समाज ने पहले से ही उठाईगीर का ठप्पा लगाने के कारण उन लोगों को कोई काम भी नहीं देता हैं, इसके कारण बेरोजगारी का प्रमाण भी बढ़ गया हैं। इसतरह बेरोजगारी के कारण विमुक्त घुमंतू समुदाय का बढ़ता प्रमाण हमारे सामने आता हैं।

संदर्भग्रंथ -

(1) लक्ष्मण गायकवाड़, उचक्का, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं 2019, पृष्ठ क्र. 19
(2) वही पृष्ठ क्र. 19
(3) वही पृष्ठ क्र. 11
(4) वही पृष्ठ क्र. 12
(5) वही पृष्ठ क्र. 15
(6) वही पृष्ठ क्र. 42
(7) वही पृष्ठ क्र. 129